Welcome

हिन्दी व्याकरण की class में

ध्वनि

ध्वनि के बिना शब्दों, पदों अथवा वाक्यों की कल्पना नहीं की जा सकती। किसी भी भाषा में **ध्वनियों** के महत्ता को नकारा नहीं जा सकता। **ध्वनियों** का समूहन शब्द, पद, वाक्य यहाँ तक कि भाषा है।

वर्णमाला

Syllabary(सिलेबेरी)

लिखित चिह्नों के ऐसे समूह को कहते है
जिसका हर एक चिह्न किसी एक की शब्दांश ध्वनि दर्शाता है

वर्णों के समूह को वर्णमाला कहा जाता है

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ

क ख ग घ ङ।

च छ ज झ ञ।

ट ठ ड ढ ण।

त थ द ध न।

प फ ब भ म।

य र ल व।

श ष स ह

वर्ण

हिंदी भाषा में प्रयुक्त सबसे छोटी ध्वनि वर्ण कहलाती है। यह मूल ध्वनि होती है, इसके और खण्ड नहीं हो सकते।

या

ध्वनि के लिखित रूप को वर्ण कहा जाता है |

अक्षर

किसी शब्द की ध्वनियों को परिवर्तित किए बिना उसे कुछ छोटे शब्दांशों मे विभक्त कर दिया जाए तो अक्षर कहलाते है

जैसे :- काम अक्षर (का तथा म) 4 वर्ण

क् ,आ ,म् ,अ

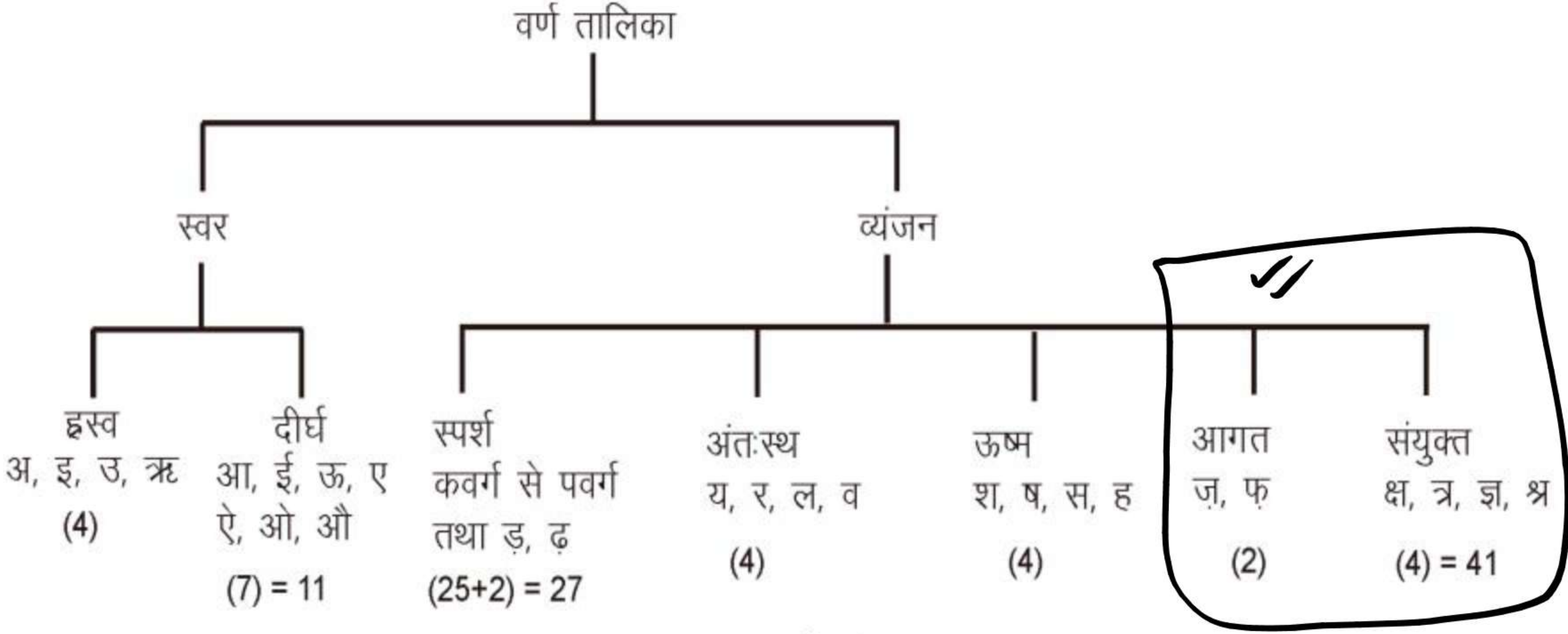

- स्वर की संख्या = 11
- व्यंजन की संख्या = 41

52

स्वर वर्ण

उच्चारण-

मुख से अक्षरों को बोलना उच्चारण कहलाता है।
वर्णों का उच्चारण मुख के भीतर भिन्न भिन्न भागों से किया जाता है

जैसे :- जिह्वा ,कंठ ,तालू ,दाँत ,ओष्ठ , मूर्धा और नासिका उच्चारण के दौरान फेफड़ों से आने वाली वायु श्वास नलिका से बाहर निकलती है यह वायु जहाँ रुकती है वह उस वर्ण का उच्चारण स्थान होती है

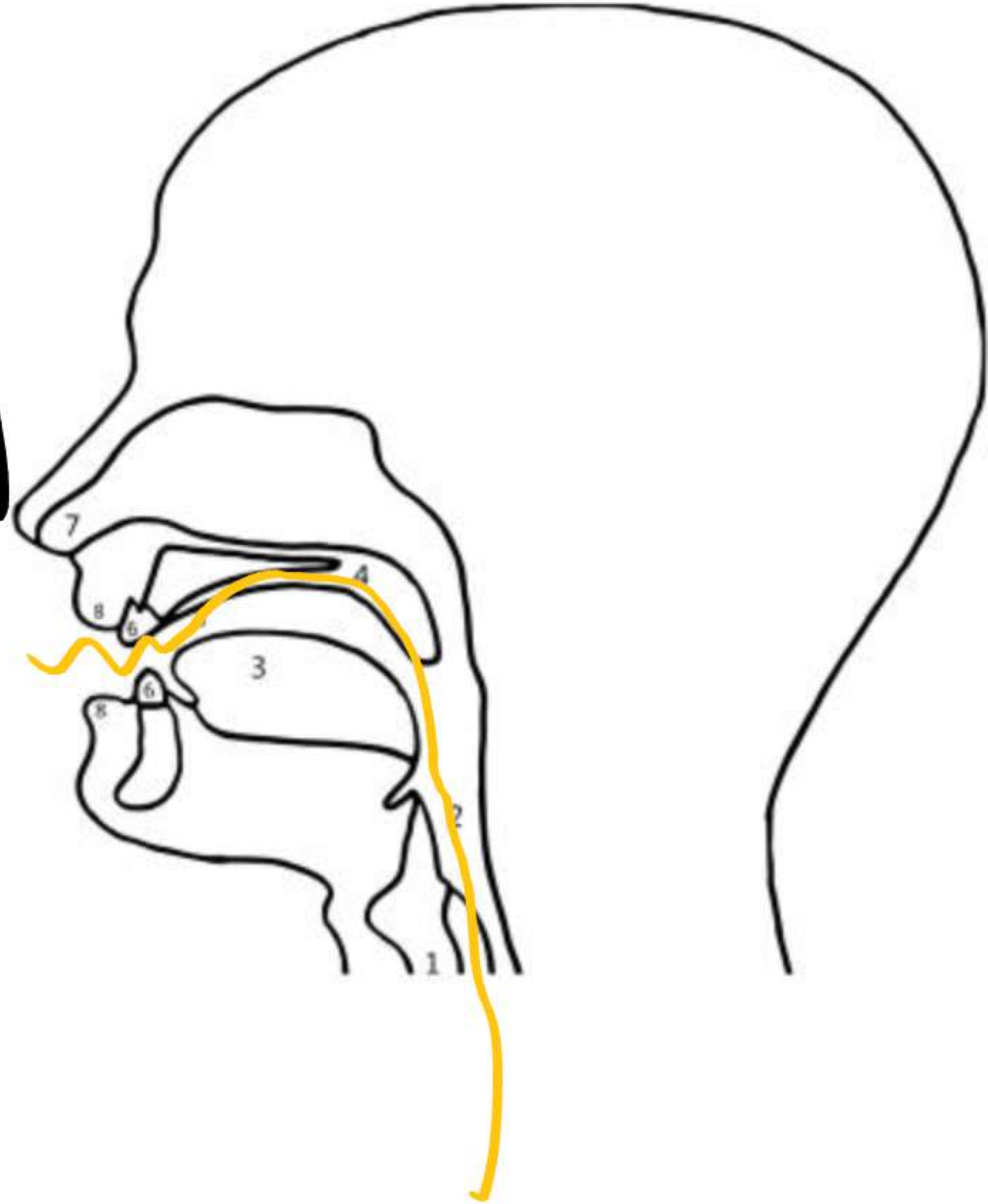

स्वर (vowel)

उन ध्वनियों को कहते हैं जो बिना किसी अन्य वर्णों की सहायता के उच्चारित किये जाते हैं। स्वतंत्र रूप से बोले जाने वाले वर्ण,स्वर कहलाते हैं। हिन्दी भाषा में मूल रूप से ग्यारह स्वर होते हैं। ग्यारह स्वर के वर्ण : अ,आ,इ,ई,उ,ऊ,ऋ,ए,ऐ,ओ,औ आदि।

आयोगवाह किसे कहते है ?

जो व्यंजन ना तो स्वर होते है और न ही व्यंजन उसे ही अयोगवाह कहते है। इनका उच्चारण करते समय स्वर की सहायता लेनी पड़ती है

अर्थात अनुस्वार और अनुनासिक को अयोगवाह कहते है।इनकी संख्या दो है।

उदाहरण- अं ,अः

स्वर के 4 भेद

- ह्रस्व स्वर
- दीर्घ स्वर
- संयुक्त दीर्घ स्वर
- प्लुत स्वर

अ / आ + इ / ई = ए

अ / आ + ए = ऐ

अ / आ + उ / ऊ = ओ

अ / आ + ओ = औ

जीभ के आधार पर उच्चारण स्थान

	अग्र	मध्य	पश्च
संवृत	ई		ऊ
अद्‌र्ध संवृत	इ		उ
अद्‌र्ध विवृत	ए	अ	ओ, ऑ
विवृत	ऐ		आ, औ

अ	ह्रस्व	कंठ्य	
आ	दीर्घ	कंठ्य	
इ	ह्रस्व	तालव्य	
ई	दीर्घ	तालव्य	
उ	ह्रस्व	ओष्ठ्य	
ऊ	दीर्घ	ओष्ठ्य	
ऋ	ह्रस्व	मूर्धन्य	
ए	दीर्घ	कंठतालव्य	त
ऐ	दीर्घ	कंठतालव्य	
ओ	दीर्घ	कंठोष्ठ्य	
औ	दीर्घ	कंठोष्ठ्य	

व्यंजन (consonant)

शब्द का प्रयोग वैसी ध्वनियों के लिये किया जाता है जिनके उच्चारण के लिये किसी स्वर की जरुरत होती है। ऐसी ध्वनियों का उच्चारण करते समय हमारे मुख के भीतर किसी न किसी अंग विशेष द्वारा वायु का अवरोध होता है।यह जब हम बोलते है,हमारे जीभ मुह के ऊपर के हिस्से से रगड़कर उष्ण हवा बाहर आता है।

व्यंजन के 5 भेद

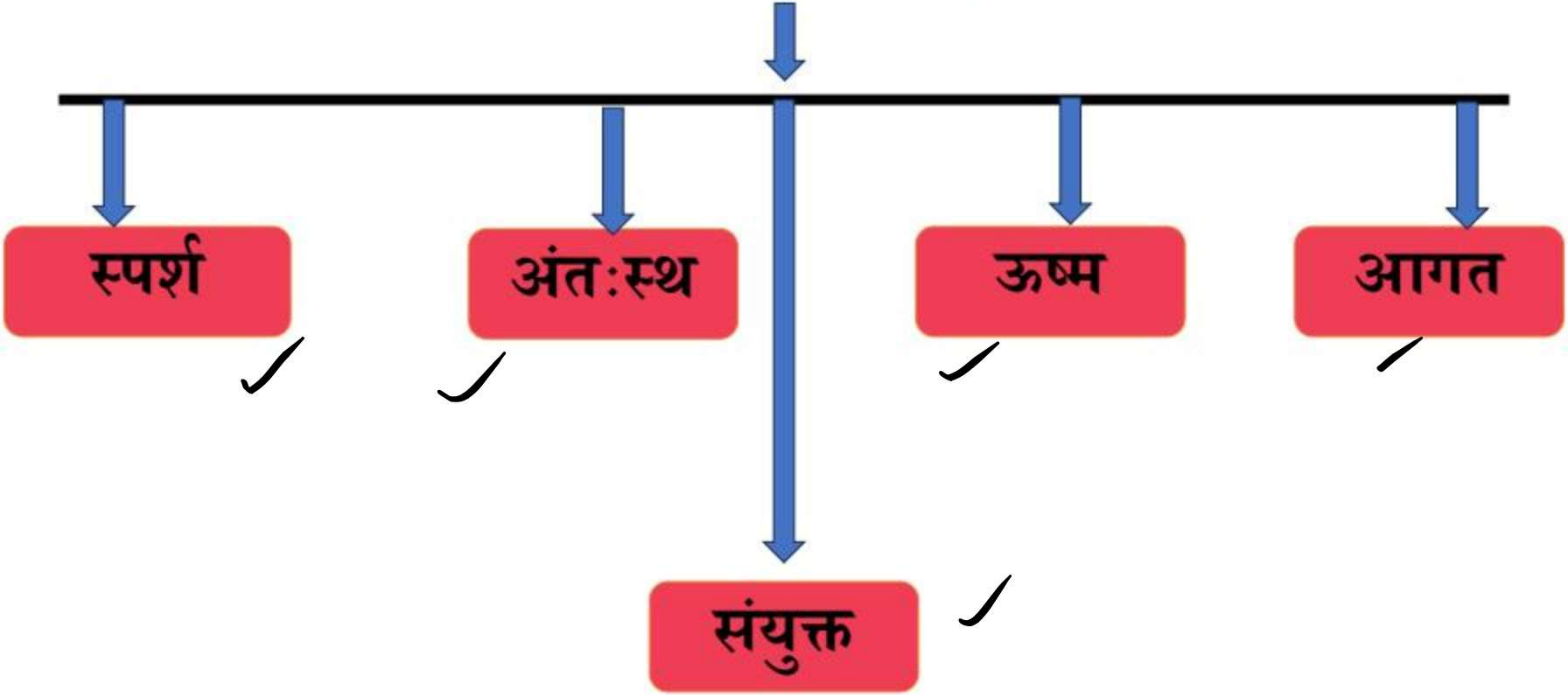

व्यंजन

स्पर्श	अंतःस्थ	ऊष्म	आगत	संयुक्त
कवर्ग से पवर्ग तथा ड़, ढ़	य, र, ल, व	श, ष, स, ह	ज़, फ़	क्ष, त्र, ज्ञ, श्र
(25+2) = 27	(4)	(4)	(2)	(4) = 41

- स्वर की संख्या = 11
- व्यंजन की संख्या = 41

52

BY NAVNEET SIR Subscribe KGS TEACHING EXAM

उच्चारण स्थान	उच्चारण स्थान	अघोष	अघोष	सघोष	सघोष	सघोष
		अल्पप्राण	महाप्राण	अल्पप्राण	महाप्राण	अल्पप्राण नासिक्य
कण्ठ	गला	क	ख	ग	घ	ड.
तालब्य	मुँह के भीतर का पिछला भाग	च	छ/श	ज ज़	झ	ञ
मूर्धन्य	मुँह के भीतर का अगला भाग	ट	ठ/ष	ड	ढ	ण
दंत्य	ऊपरी दांत	त	थ	द	ध	न
ओष्ठ	ओठ	प	फ फ़	ब	भ	म
तालब्य	भीतरी छत का अगला भाग		श	य		
वत्सर्प	दंत + मसूड़ा (दंतमूल)		स	र, ल		
दन्तोष्ठ्य	ऊपर के दाँत + निचला होंठ			व		
मूर्धन्य	मुँह के भीतर का पिछला भाग		ष			
स्वरतंत्रीय	स्वर के कंठ भीतर				ह	
उत्क्षिपत	जीभ के ऊपर नीचे तेजी से आना			ड़	ढ़	

अल्प प्राण

- अल्प → थोड़ा/कम
- प्राण → वायु

जिन वर्णों के उच्चारण मे कम वायु बाहर निकलती है उसे

महा प्राण

- महा → ज्यादा/अधिक
- प्राण → वायु

जिन वर्णों के उच्चारण मे ज्यादा वायु बाहर निकलती महा प्राप कहते

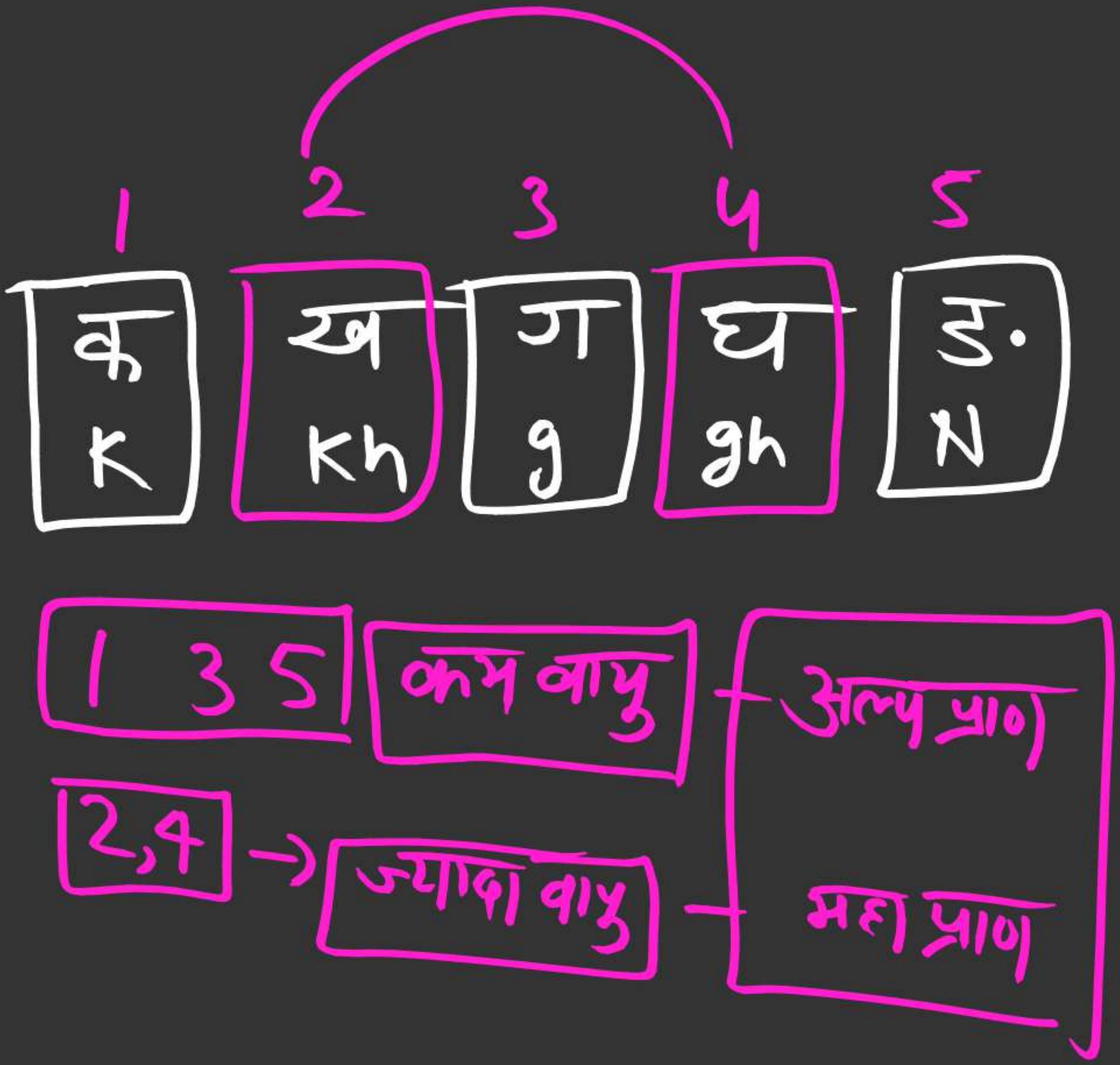
1 2 3 4 5
क K
ख Kh
ग g
घ gh
ङ N
1 3 5
कम वायु
अल्प प्राण
2,4
ज्यादा वायु
महा प्राण

१		3		5
च	छ	ज	झ	ञ
ch	chh	J	JH	N
त	ठ	ड	ढ	ण
T	Th	D	DH	N

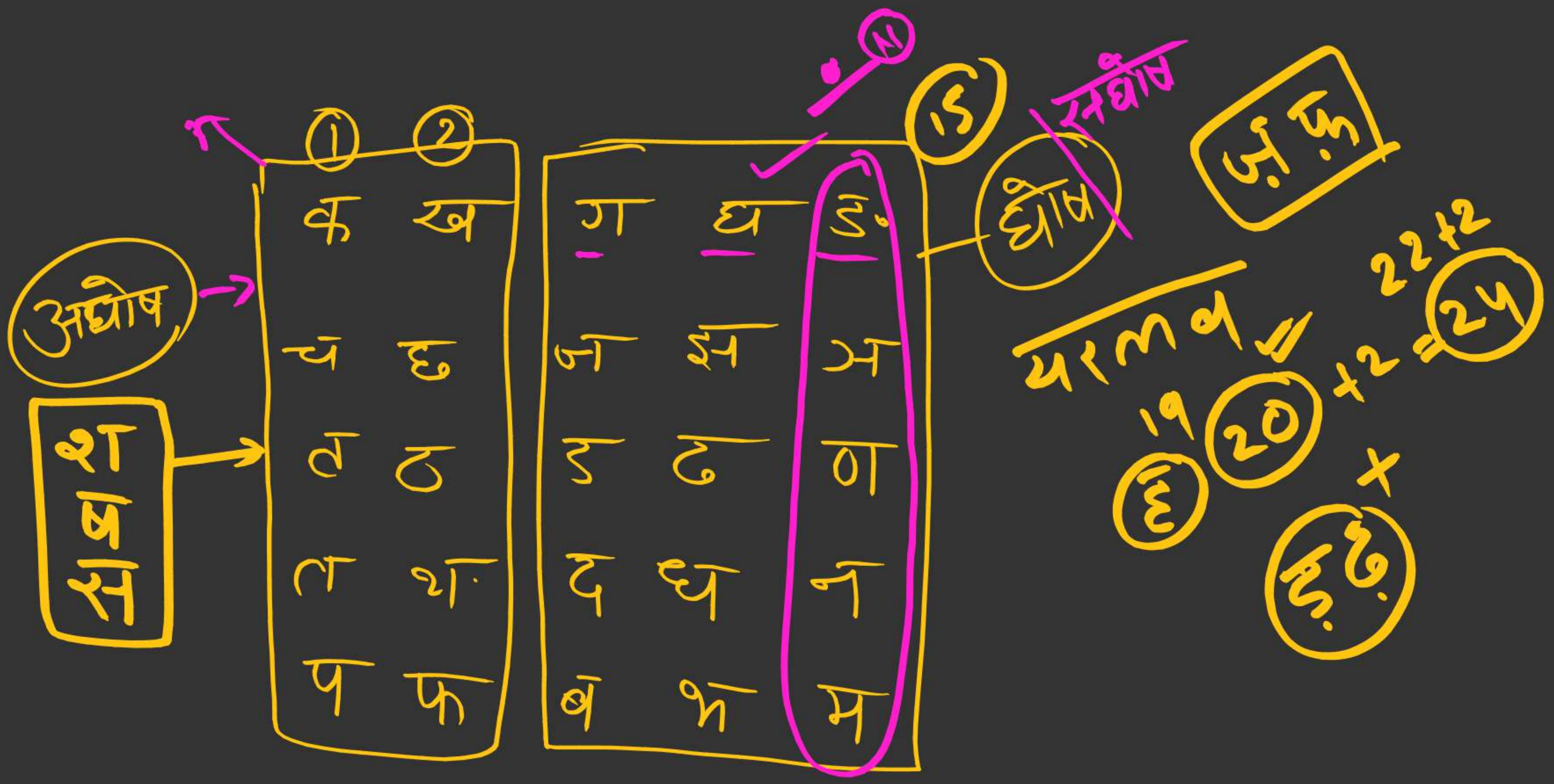

अघोष
श ष स
1 2
क ख
च छ
ट ठ
त थ
प फ
ग घ ङ
ज झ ञ
ड ढ ण
द ध न
ब भ म
15
घोष
सघोष
ड़ ढ़
यरलव
19
20
ह
+2
22+2 = 24

आगत स्वर

ऑ

(अंग्रेज़ी)

डॉक्टर

मॉडल

आगत व्यंजन

ज़ फ़ (अरबी/फ़ारसी)

आये हुए (विदेशी भाषा)
(हिन्दी में शामिल)

- संघर्षी व्यंजन

- – कुछ व्यंजनों के उच्चारण में उच्चारण अवयव (जीभ या निचला ओठ) उच्चारण स्थान का स्पर्ष नही करते बल्कि उसके इतने निकट पहुँच जाते हैं कि दोनों के बीच इतनी कम जगह रह जाती है कि वायु को घषर्ण करते हुए मुख से बाहर निकलना पड़ता है। इस स्थिति में जो व्यंजन उच्चरित किए जाते हैं, 'संघर्षी व्यंजन' कहे जाते हैं। संस्कृत में इन्हीं व्यंजनों को 'ऊष्म' ध्वनियाँ कहते थे।

संयुक्त व्यंजन

(4) => जो व्यंजन अलग-अलग व्यंजन के मेल से बनते हैं। उसे संयुक्त व्यंजन कहते हैं।

क्ष = क् + ष् + अ

त्र = त् + र् + अ

ज्ञ = ज् + ञ् + अ

श्र = श् + र् + अ

स्वरतंत्रियों में उत्पन्न कंपन के आधार पर

- अघोष– इन ध्वनियों के उच्चारण में स्वरतंत्रियों में कंपन नहीं होता है। (प्रत्येक वर्ग के प्रथम और द्वितीय वर्ण) तथा फ़, श, ष, स अघोष हैं।
- सघोष– इन ध्वनियों के उच्चारण में स्वरतंत्रियों में कंपन होता है। (प्रत्येक वर्ग के तृतीय, चतुर्थ तथा पंचम वर्ण) तथा ड़, ढ़, य, र, ल, व, ह (एवं सभी स्वर) सघोष हैं।

अघोष

जिन वर्णों के उच्चारण में नाद पैदा होता है। उसे हम घोष / सघोष

स्वर तंत्रिकाओं में कंपन

सघोष / घोष

स → साथ में

स + परिवार

लुंठित व्यंजन

लुंठित : इन व्यंजनों के उच्चारण में जिह्वा वत्स्र्य भाग की ओर उठती है।

हिन्दी में 'र' व्यंजन इसी तरह की ध्वनि है।

काकल्य

जिन व्यंजन ध्वनियों के उच्चारण मे मुकहगुहा खुली रहती है और वायु बंद कंठ को खोल कर झटके से बाहर निकल पड़ती है उसे काकल्य व्यंजन ध्वनिया कहते है

जैसे हिन्दी मे 'ह " | यह ध्वनि हिन्दी मे स्वरों की तरह ही बिना किसी अवरोध के उच्चारित होती है

द्वित्व व्यंजन

एक ही प्रकार के स्वर रहित व स्वर युक्त व्यंजन जब एक साथ उच्चारित किए जाएँ या बोले जाएँ, तब उन्हें द्वित्व व्यंजन कहते हैं ; जैसे –

न् + न = न्न (गन्ना

त् + त = त्ता (पत्ता)

ल् + ल = ल्ल (दिल्ली)

क् + क = क्का (छक्का)

च् + च = च्चा (बच्चा)

गन्ना

पत्ता

(ल्) ल

ल्ल

=> दिल्ली

=> पिल्ली

बिल्लो

कल्लो

3.स्वर रहित ट्, ठ्, ड्, ढ् के बाद स्वर सहित "र" जुड़ने पर "र" पदेन के इस रूप में ( ) उनके नीचे लगता है।

जैसे = ट् + र = ट्र = ट्रेन, ट्रक

ड् + र = ड्र = ड्रामा, ड्रम

नोट → "र" का यह रूप ( ) भी पदेन कहलाता है।

जैसे = त् + र = त्र

श् + र = श्र

अनुस्वार और अनुनासिक में अंतर

अनुस्वार और अनुनासिक के उच्चारण में भिन्नता है | अनुस्वार के उच्चारण में वायु नाक से निकलती है, जबकि अनुनासिक के उच्चारण के समय वायु नाक और मुँह दोनों से निकलती है | जैसे – हंस और हँसना | हंस, अंश, कंस आदि का उच्चारण करते समय वायु नाक से निकल रही है, जबकि आँख, पाँव, हँसना आदि का उच्चारण करते समय वायु नाक तथा मुख दोनों से निकल रही है |

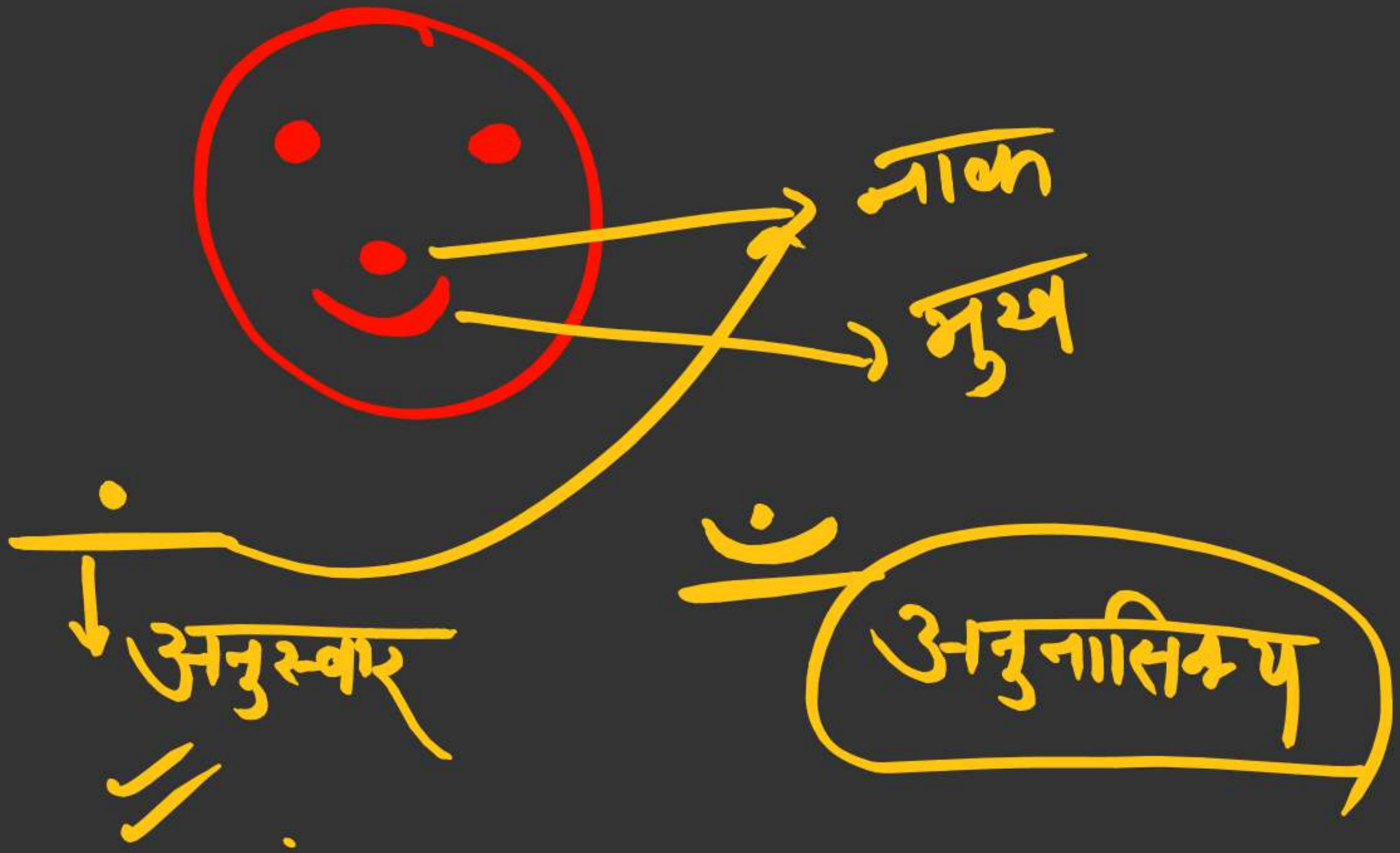

नाक
मुख
ं
अनुस्वार
ँ
अनुनासिक

संयुक्ताक्षर

क्या
क्यों

वह अक्षर जो संयुक्तक्षरों(एक से अधिक व्यंजनों के मेल से बना हो) के मेल से बना हो। जैसे—क् और त् के योग से 'क्त' या प् और ल् के योग से 'प्ल'

द्वित्व

बिल्ली

संयुक्ताक्षर

क्या

संयुक्त व्यंजन

जो व्यंजन 2 या 2 से अधिक व्यंजनों के मिलने से बनते हैं उन्हें संयुक्त व्यंजन कहा जाता है। संयुक्त व्यंजन एक तरह से व्यंजन का ही एक प्रकार है। संयुक्त व्यंजन में जो पहला व्यंजन होता है वो हमेशा स्वर रहित होता है और इसके विपरीत दूसरा व्यंजन हमेशा स्वर सहित होता है।

संयुक्त व्यंजन की हिंदी वर्णमाला में कुल संख्या 4 है जो की निम्नलिखित हैं।

क्ष - क् + ष

त्र - त् + र

ज्ञ - ज् + ञ

श्र - श् + र

बलाघात के प्रकार

बलाघात जब कोई व्यक्ति बोलता है तो सभी ध्वनियों का उच्चारण समान रूप से नहीं होता है। कभी किसी वाक्य के एक शब्द पर अधिक बल होता है , तो कभी दूसरे शब्द पर। शब्द में भी कभी-कभी एक अक्षर पर बल अधिक होता है , तो कभी दूसरे अक्षर पर उच्चारण के इसी गुण को ' बलाघात ' कहते हैं।

प्रायः बलाघात का अर्थ ' अक्षर ' बालाघात से लिया जाता है।

जैसे – '

राम ' और ' काम ' शब्द में ' रा ' और ' का ' के ऊपर बलाघात है।

जब दो अक्षर साथ-साथ आते हैं तो , एक अक्षर पर बलाघात अधिक होता है और दूसरे पर कम।